आदर्शों का हृदय में स्थान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

ऊंचे आदर्शों को लक्ष्य बनाकर मनुष्य मार्ग प्रशस्त करता है। जब लक्ष्य ऊंचा रहता है तो मार्ग भी स्वयं बन जाता है। द्वैत से अद्वैत बनना हमारी सिद्धि है हमारा लक्ष्य है अद्वैत को प्राप्त करना। जहां द्वैत है वहां भेद है। शरीर और आत्मा में द्वैत है इसलिए शरीर और आत्मा भिन्न–भिन्न है। संसार में जितने भी प्राणी है उन सभी में आत्मा है और सभी की आत्मा समान है। आत्मा में कोई भेद नहीं है। आदर्श एक लक्ष्य है उसको प्राप्त करने का प्रयास होना चाहिए। आदर्शों को मन में रखकर जो आगे बढ़ता है वह लक्षित मंजिल को प्राप्त कर लेता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उदाहरण इस सम्बन्ध में स्मरणीय है। गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने अनेक लक्ष्यों को पूरा किया था। आगे बढ़ने की सोच उनके मन में थी। इसी का परिणाम था कि भारत का प्रधानमंत्री बनकर आज देश की सेवा कर रहे हैं। ईमानदारी सबको साथ लेकर चलने का दृढ़ संकल्प उनके जीवन का लक्ष्य था। सत्यवादिता, ईमानदारी, भाईचारे का संदेश जीवन का आदर्श है। जो नैतिक होता है वह सबसे बड़ा ईमानदार है। नैतिकता का पालन करना चाहिए। नैतिक व्यक्ति किसी का शोषण नहीं करता। वह किसी का दिल नहीं दुखाता। नैतिकता के लिए जरूरी नहीं है कि हम मन्दिर या मस्जिद में जायें। केवल कर्तव्य कर्म का पालन करें यही सबसे बड़ी नैतिकता है। मन, वचन और काया से अहिंसा का पालन करें। किसी को दुःख न देना, किसी की बुराई न करना सेवाभाव, परोपकार, अहिंसा, शिष्टाचार यह सब जीवन के आदर्श हैं। इन आदर्शो को प्राप्त करने के लिए विश्व बधुत्व की भावना का होना और हृदय में संवेदनशीलता का होना आवश्यक है। बुद्धि तर्क करती है किन्तु हृदय संवेदनशील होता है। इसलिए हृदय की गहराईयों से चिंतन होना चाहिए। दूसरों के दुःख से दुखी होना संवेदना है। मन नाटक कर सकता है किन्तु हृदय नहीं। जो हमारे हृदय में घर कर जाता है वह घटना कभी नहीं भुलती। सुबह से शाम तक जो कार्य करते हैं उस कार्य को करने की हमारे आदत पड़ जाती है। जो पुत्र माता–पिता की सेवा करता है, जो माता–पिता की बात मानता है वह माता–पिता के हृदय में बस जाता है।

किन्तु जो पुत्र धन प्राप्ति के लिए दिखावा करता है ऐसे पुत्र आदर्श नहीं होते। आज के युग में आदर्श नष्ट हो रहे हैं। इसलिए हृदय से आदर्शों का संरक्षण करना चाहिए।

प्रकृति के साथ तालमेल बैठाना, प्रकृति के साथ जीना, प्रकृति का संरक्षण करना, मानव मात्र के साथ मैत्री का व्यवहार करना, सभी जीवों को अपने समान मानना, और सर्वभूत हित चिन्तन करना, बड़ों का सम्मान करना आदर्श जीवन शैली के मूलमंत्र है। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए मनुष्य को ऐसा आचरण करना चाहिए कि उसका सब अनुकरण करे। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पंचमहाभूतों की पूजा हमारे देश में अनादिकाल से हो रही है। हमारे पूर्वजों को यह ज्ञात था कि यदि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ किया जायेगा तो प्रकृति रूष्ट होकर के मानव को उसका दंड अवश्य देगी। प्रकृति के जितने भी अवयव है वे सभी प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर जीवन–यापन करते है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो प्रकृति के प्रतिकूल आचरण करता है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की सभ्यता में प्रकृति पूजा के चिह्न मिले है। प्रकृति के जितने भी उपादान है वे सभी समान बर्ताव करते है। रात दिन का होना, सूर्य और चन्द्रमा का अपने गति के अनुसार पथ पर चलना, षड ऋतुओं का होना और जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन ये सब क्रियाएं प्रकृति अपने आप करती रहती है। रात और दिन की रचना के पीछे सिद्धांत यह है कि दिन में मनुष्य काम करे और रात में शयन करे। यह मानव के लिए है। यदि इसके विपरीत आचरण किया जाता है तो यह दानव का काम होता है। किन्तु आजकल भिड़मभाड़ वाली जिन्दगी में रात दिन का अन्तर ही समाप्त हो गया है। इसलिए जीवन–यापन करने के लिए लोग रातों दिन काम करते है। अंग्रेजी भाषा में एक कहावत है–

Early to bed and early to rise

Makes a man healthy wealthy and wise

समय का नियोजन स्वस्थ जीवनचर्या के लिए बहुत आवश्यक है। जब शरीर स्वस्थ रहेगा तो दिमाग भी स्वस्थ रहेगा। समाज मे रहनेवाले हर वर्ग के लिए समय का नियोजन आवश्यक है। विद्यार्थी को चाहिए कि वह समय से अध्ययन करें और अपने लक्षित मंजिल का प्राप्त करें।

अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह अपने अध्यापन के कार्य को पूर्ण मनोयोग के साथ करें। किसान का कार्य यह है कि वह समय के अनुकूल फसलों को बोये और अधिक से अधिक अन्न उत्पन्न करे। इसी प्रकार राजनेता, अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर और व्यवसायी सभी अपने–अपने उत्तरदायित्वों को समझते हुए कार्य करे जिससे समाज में एक रूपता बनी रहे और राष्ट्र का विकास हो। समय के नियोजन के बिना उन्नति होना असंभव है। जिस मौसम में जो फसल बोनी जानी है यदि उसको न बोकर अन्य फसल का उत्पादन करने का प्रयास किया जायेगा तो सफलता नहीं मिलेगी। इसी प्रकार विद्यार्थी अपने विद्यार्थी जीवन में यदि विद्यार्जन करने में लापरवाही दिखायेंगे तो जीवनभर उनकों कष्ट उठाना पड़ेगा।